اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''इस्लाहे उम्मत में दा'वते इस्लामी का किरदार''**

दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)'' ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **''हुरूफ़ की पहचान''** नामी चार्ट मुला-हज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन हर्फ़ के नीचे खोड़ा (़) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت،استعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

ह़ुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ **''मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो इस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

29 ज़ुल का'दतिल ह़राम 1435 सि.हि.\ 24 सितम्बर 2014 सि.ई

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इस्लाहे उम्मत में दा'वते इस्लामी का किरदार

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (28 सफ़्ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-फ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मिसाली शख़्सिय्यत

अ़र्ज़ : आप की मिसाली शख़्सिय्यत (Ideal) कौन हैं ?

مدینہ

1 ..... مُسْنَدِ اَبُو يَعْلٰى، ج۳، ص۹۵، حدیث ۲۹۵۱، دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

इर्शाद : मेरी मिसाली शख़्सिय्यत (Ideal) सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से नुज़ूले ख़ैरो ब-र-कत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن हैं। हर एक को चाहिये कि वोह किसी न किसी **अल्लाह** वाले को ज़रूर अपना आईडियल बना ले ताकि उस की इस्लामी ता'लीमात पर अ़मल करते हुए शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार कर आख़िरत में नजात पा सके।

बुज़ुर्गों के इर्शाद : ''يَكْ دَرْگِيْر مُحْكَم گِيْر या'नी एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूत़ी के साथ पकड़'' के मुत़ाबिक़ मैं ने आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का दरवाज़ा मज़बूत़ी से पकड़ लिया है। मैं ने किसी की सुनी सुनाई बातों में आ कर, आंखें बन्द कर के येह जज़्बाती फ़ैसला नहीं किया बल्कि मैं ने ख़ूब सोच समझ कर, इन्हें पढ़ कर इन का दामन मज़बूत़ी से पकड़ने का फ़ैसला किया है। अब येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचाएगा और येही शम्ए़ बज़्मे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सच्चा आ़शिक़ जन्नत में मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस दिलाएगा।

आसियो ! थाम लो दामन उन का
वोह नहीं हाथ झटकने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

बैरूने मुल्क अस्फ़ार

अ़र्ज़ : आप पाकिस्तान से बाहर कौन कौन से ममालिक में तशरीफ़ ले गए हैं ?

इर्शाद : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की बारहा ह़ाज़िरी नसीब हुई है। इस के इ़लावा इ़राक़ शरीफ़, मुत्तह़िदा अ़रब अमारात, सीलोन (सीलंका), हिन्दूस्तान और जुनूबी अफ़्रीक़ा का सफ़र किया है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तअस्सुरात

अ़र्ज़ : दूसरे ममालिक में जा कर आप ने वहां के लोगों को कैसा पाया ? नीज़ बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द के मुसल्मानों के बारे में आप के क्या तअस्सुरात क़ाइम हुए हैं ?

इर्शाद : मैं ने पाकिस्तान और हिन्द के मुसल्मानों में इस्लाम का सब से ज़ियादा जज़्बा पाया है। इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पाक व हिन्द के मुसल्मानों से तो शायद ही कोई बढ़ सके। मेरी नाक़िस मा'लूमात के मुत़ाबिक़ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में पाक व हिन्द की त़रफ़ क़दम शरीफ़ किये हुए हैं गोया हम सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़-दमैने शरीफ़ैन की सीध में हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे

www.dawateislami.net

दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ करते हैं :

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तल्वा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

और ग़ालिबन बाबुल का'बा का रुख़ भी पाक व हिन्द की त़रफ़ है। इन दोनों मुक़द्दस जिहात (सम्तों) में अगर्चे दीगर ममालिक भी हैं मगर पाक व हिन्द के मुसल्मानों पर फ़ैज़ान ज़ियादा नज़र आ रहा है।

इस्लाहे उम्मत के लिये लाइह़ए अ़मल

अ़र्ज़ : आ़लमे इस्लाम में मुसल्मानों की अक्सरिय्यत बे अ़-मली का शिकार है तो इन की इस्लाह़ के लिये आप के पास क्या लाइह़ए अ़मल है ?

इर्शाद : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी और इस का म-दनी काम किसी तआ़रुफ़ का मोह़ताज नहीं। दा'वते इस्लामी के मा'रिज़े वुजूद में आने का मक़्सद ही येह है कि दुन्या भर के मुसल्मानों को जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दरबार से दूर और हुब्बे दुन्या के नशे से चूर हैं इन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़रीब किया जाए, हुब्बे दुन्या का नशा उतार कर इन को इ़श्क़े रसूल का जाम पिलाया जाए,

www.dawateislami.net

बे नमाज़ों को नमाज़ी और फ़ेशन परस्तों को सुन्नतों का आ़दी बनाया जाए, लन्दन व पेरिस के सपने देखने वालों को मदीने का दीवाना बनाया जाए। अगर दुन्या भर के मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुए रास्ते पर चल पड़ें तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ अम्नो आश्ती की मन्ज़िल खुद आगे बढ़ कर इन को गले लगा ले और इन पर हर घड़ी रह़मते इलाही की ऐसी बरखा बरसे कि सारे गुनाह धुल जाएं, नेकियों का रंग चढ़ जाए और हर सू सुन्नतों के परचम लहराने लगें।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दह्र में इस्मे मुह़म्मद से उजाला कर दे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهعَزَّوَجَلَّ ! बाबुल मदीना (कराची) से 1401 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1981 सि.ई के अवाइल में उठने वाली म-दनी तह़रीक, **''दा'वते इस्लामी''** देखते ही देखते मुख़्तसर से अ़र्से में बाबुल इस्लाम (सिन्ध), पंजाब, ख़ैबर पख़्तून ख़्वाह, कश्मीर, बलूचिस्तान और फिर मुल्क से बाहर हिन्द, बंगला देश, अ़रब अमारात, सीलंका, अमरीका, बरत़ानिया, ओस्ट्रेलिया, कोरिया, जुनूबी अफ़्रीक़ा यहां तक कि (ता दमे अ़र्ज़) दुन्या के कमो बेश दो सो ममालिक में इस का पैग़ाम पहुंच चुका है। हज़ारों मक़ामात पर सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाआ़त हो रहे हैं और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले बे शुमार मुबल्लिग़ीन इस

www.dawateislami.net

मुक़द्दस जज़्बे "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" के तह़्त इस्लाहे़ उम्मत के कामों में मसरूफ़ हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश)

दा'वते इस्लामी के शो'बाजात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस वक़्त दा'वते इस्लामी 92 से ज़ाइद शो'बाजात में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है म-सलन मसाजिद की ता'मीरात के लिये **ख़ुद्दामुल मसाजिद,** ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की ता'लीम के लिये **मद्र-सतुल मदीना,** बालिग़ान की ता'लीमे क़ुरआन के लिये **मद्र-सतुल मदीना बराए बालिग़ान,** दीनी ता'लीम व तरबियत के साथ साथ मुरवज्जा ता'लीम के लिये **दारुल मदीना,** शर-ई रहनुमाई के लिये **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत,** उ़-लमा की तय्यारी के लिये **जामिअ़तुल मदीना,** तरबियते इफ़्ता के लिये **तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह** और उम्मत को दरपेश जदीद मसाइल के ह़ल के लिये **मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइय्या,** तह़रीरन पैग़ामे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت को आ़म करने और इस्लाही़ कुतुब की फ़राहमी के लिये **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या,** सुन्नी मुसन्निफ़ीन की तसानीफ़ व तालीफ़ात को

www.dawateislami.net

शर-ई अग़्लात़ से महफ़ूज़ रखने के लिये **मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल,** रूहानी इ़लाज और दुन्या भर से आने वाले माहाना हज़ारों मक्तूबात व मेल्ज़ (Mails) के जवाबात के लिये **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या,** म-दमी पैग़ाम दुन्या के गोशे गोशे मे पहुंचाने के लिये **म-दनी चेनल,** इस्लामी बहनों के लिये इन के **हफ़्तावार इज्तिमाआ़त** व दीगर म-दनी काम, मुसल्मानों में अ़मल का जज़्बा बेदार करने के लिये सुवालात की सूरत में **म-दनी इन्आ़मात** और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये दुन्या के कई ममालिक में **म-दनी क़ाफ़िलों** और **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** का म-दनी जाल बिछाया जा चुका है। स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और यूनीवर्सिटीज़ में ता'लीम ह़ासिल करने वाले त़-लबा, गूंगे बहरे, नाबीना इस्लामी भाइयों और जेलों में क़ैदियों की इस्लाह़ के लिये भी मजालिस क़ाइम की जा चुकी हैं और फिर इन तमाम शो'बाजात की कारकर्दगी पर नज़र रखने और दुन्या भर में सारे म-दनी निज़ाम को अह्सन त़रीक़े से चलाने के लिये **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** क़ाइम कर दी गई है।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम सारे जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

क्या मुसल्मान जिन्नात जन्नत में जाएंगे ?

अ़र्ज़ : क्या मुसल्मान जिन्नात जन्नत में जाएंगे ?

www.dawateislami.net

इर्शाद : मुसल्मान जिन्नात जन्नत में जाएंगे या नहीं इस में इख़्तिलाफ़ है। शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सह़ीह़ और राजेह़ येह है कि येह ए'राफ़ में रहेंगे। जन्नत ह़ज़रते आदम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की जागीर है सिर्फ़ उन की औलाद को मिलेगी।"[1]

काफ़िर जिन्नात कहां जाएंगे ?

अ़र्ज़ : काफ़िर जिन्नात का क्या बनेगा ?

इर्शाद : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों और जिन्नों को अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया है तो जिस त़रह़ इन्सान बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर ह़ाज़िर हो कर अपने किये का ह़िसाब देंगे ऐसे ही जिन्नात को भी अपने किये धरे का ह़िसाब देने के लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया जाएगा चुनान्चे पारह 23 **सू-रतुस्साफ़्फ़ात** की आयत नम्बर 158 में इर्शाद होता है :

وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जिन्नों को मा'लूम है कि वोह ज़रूर ह़ाज़िर लाए जाएंगे।

1 ..... नुज़्ह़तुल क़ारी, जि. 4, स. 351, फ़रीद बुक स्टोल मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

इस आयते मुबा-रका के तह़्त शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिन्नों का ह़िसाब होगा, इसे लाज़िम है कि इन को इन के आ'माले ह़-सना (नेक कामों) पर सवाब मिलेगा और बुरे आ'माल की सज़ा मिलेगी।[1]

मा'लूम हुवा कि क़ियामत के दिन जिन्नात का ह़िसाबो किताब होगा और उन के आ'माल के मुत़ाबिक़ उन्हें जज़ा व सज़ा भी दी जाएगी। जो काफ़िर होंगे उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा चुनान्चे पारह 29 **सू-रतुल जिन्न** की आयत नम्बर 15 में इर्शाद होता है :

وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रहे ज़ालिम वोह जहन्नम के ईंधन हुए।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नासिरुद्दीन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : काफ़िर इन्सानों की त़रह़ काफ़िर जिन्नात भी (जहन्नम की आग में) जलाए जाएंगे।[2]

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐ़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

مدینہ

1 ..... नुज़्ह़तुल क़ारी, जि. 4, स. 351

2 تفسیر بیضاوی، ج ۵، ص ۳۹۹، دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से जिन्नात की जज़ा व सज़ा के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! इन के लिये सवाब भी है और अ़ज़ाब भी है।'' उ़-लमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि आख़िरत में काफ़िर जिन्नों को अ़ज़ाब दिया जाएगा क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शाद है : ﴿اَلنَّارُ مَثْوٰىكُمْ﴾[1] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** आग तुम्हारा ठिकाना है।[2]

बुज़ुर्गों की निशस्त गाह पर बैठना

अ़र्ज़ : बुज़ुर्गों की निशस्त गाह पर बैठना कैसा है ?

इर्शाद : बुज़ुर्गों की निशस्त गाह पर बैठना बे अ-दबी है। याद रखिये ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का अदब बहुत बड़ी सआ़दत और बे अ-दबी ज़बर दस्त आफ़त है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुर्शिद के आदाब ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : इस की ग़ैबत (अ़-दमे मौजू-दगी) में इस की जगह बैठना मन्अ़ है। इस के कपड़ों की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है। इस के बिछोने की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है। इस की चौखट की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है।[3]

---

1 ..... پ۸، الانعام: ۱۲۸

2 ..... عُمْدَةُ الْقَارِی، ج ۱۰، ص ۲۴۵، دار الفکر بیروت

3 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 563, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

एक इस्तिफ़्ता में तस्ह़ीह़ व तस्दीक़ की ग़रज़ से चन्द आदाब लिख कर भेजे गए जिन की सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने ताईद फ़रमाई, इन्ही आदाब में येह भी मज़्कूर है : ह़त्तल इम्कान ऐसी जगह न खड़ा हो कि इस का साया मुर्शिद के साए पर या उस के कपड़े पर पड़े, उस के मुसल्ले (या'नी जा-ए नमाज़) पर पैर (पाउं) न रखे, मुर्शिद के बरतनों को इस्ति'माल में न लाए ।[1]

फ़वाइदुल फ़ुवाद में है : ह़ुज़ूर सय्यिदी ग़ौसुल आ'ज़म दस्त गीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने अपनी ख़ान्क़ाह शरीफ़ के बाहर एक शख़्स को पड़ा देखा जो इन्तिहाई ख़स्ता ह़ाल था और उस के पाउं टूटे हुए थे । उस शख़्स ने दुआ की दर-ख़्वास्त करते हुए अ़र्ज़ की, कल मुझ समेत तीन अब्दाल हवा में उड़ते हुए जा रहे थे कि आप की ख़ान्क़ाह से गुज़र हुवा, मेरा एक रफ़ीक़ अ-दबन दाईं त़रफ़ से और दूसरा बाईं त़रफ़ से गुज़र गया, मुझ बद नसीब से बे अ-दबी सरज़द हो गई, मैं ख़ान्क़ाह शरीफ़ के ऊपर उड़ कर गुज़रा और इस बे अ-दबी की सज़ा में धड़ाम से गिर पड़ा ।[2]

از خدا خواہیم توفیقِ ادب
بے اَدَب مَحروم گشت از فضلِ ربّ

مدینہ

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 581

2 فَوائِدُ الْفُواد آزْ ہَشْت بَہِشْت، ص ۲۷۴، شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور

www.dawateislami.net

(या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अदब की तौफ़ीक़ के त़लब गार हैं कि बे अदब फ़ज़्ले रब عَزَّوَجَلَّ से महरूम हो कर दर ब दर ज़लीलो ख़्वार फिरता है।)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में बुज़ुर्गों का बहुत अदब किया जाता है बल्कि ह़क़ीक़त तो येह है कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इनायत से दा'वते इस्लामी फ़ैज़ाने औलिया رَحِمَهُمُ الله की बदौलत चल रही है।

मंगल के दिन कपड़ा न काटा जाए

अ़र्ज़ : वोह कौन सा दिन है जिस दिन कपड़े की कटाई (Cutting) नहीं करनी चाहिये ?

इर्शाद : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मंगल के दिन कपड़ा क़त़्अ़ न किया जाए, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "जो कपड़ा मंगल के रोज़ क़त़्अ़ किया जाए, वोह जले या डूबे या चोरी हो जाए।"[1] मंगल के दिन कपड़े काटना शरअ़न जाइज़ है मगर वाजिब नहीं लिहाज़ा कपड़े सीने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमत में मश्वरा है कि मंगल के दिन कपड़े

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 184

www.dawateislami.net

काटने से इज्तिनाब करते हुए किसी और दिन काट लें।

म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त

अ़र्ज़ : बा'ज़ "**ज़िम्मादार**" कहलाने वाले इस्लामी भाइयों तक जब म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से कोई हि़क्मते अ़-मली (Policy) पहुंचती है तो वोह इस त़रह़ अपने मा तह़ूत ज़िम्मादारान का ज़ेह़न बनाते हैं कि "ठीक है, म-दनी मर्कज़ ने सह़ीह़ कहा है, मगर हमें यहां अपने ह़ालात का पता है, हम तो यहां वोही करेंगे जिस का हमें तजरिबा है।" ऐसा कहने वाले ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ?

इर्शाद : ऐसा कहने वाले ज़िम्मादार यक़ीनन ग़ैर ज़िम्मादार हैं। अगर बिलफ़र्ज़ किसी अ़लाक़े में किसी वज्ह से म-दनी मर्कज़ की हि़क्मते अ़-मली (Policy) पर अ़मल करना मुम्किन नज़र नहीं आता तो उस अ़लाक़े के ज़िम्मादार को चाहिये कि तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ म-दनी मर्कज़ को ए'तिमाद में ले ले और म-दनी मर्कज़ जैसे इजाज़त दे उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करे। हर ज़िम्मादार को अपनी मरज़ी से कोई हि़क्मते अ़-मली तरतीब देने के बजाए हमेशा तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त करते हुए चलना चाहिये। अगर इस उसूल के पाबन्द रहेंगे तो आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी का म-दनी काम मज़्बूत़ होगा जब कि मन मानी या ख़ुद पसन्दी से म-दनी काम इन्ह़ित़ात़ का

www.dawateislami.net

शिकार हो जाएगा ।

लुक़्ता की ता'रीफ़ और इस का हुक्म

अ़र्ज़ : लुक़्ता किसे कहते हैं ? नीज़ अगर किसी की गिरी पड़ी चीज़ म-सलन घड़ी वग़ैरा पाई और उस को उठा लिया तो अब क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : लुक़्ता उस माल को कहते हैं जो पड़ा हुवा कहीं मिल जाए ।[1] अगर किसी की गिरी पड़ी चीज़ म-सलन घड़ी वग़ैरा पाई और उस को उठा लिया तो अब उस की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : पड़ा हुवा माल कहीं मिला और येह ख़याल हो कि मैं इस के मालिक को तलाश कर के दे दूंगा तो उठा लेना मुस्तह़ब है और अगर अन्देशा हो कि शायद मैं ख़ुद ही रख लूं और मालिक को न तलाश करूं तो छोड़ देना बेहतर है और अगर ज़न्ने ग़ालिब (या'नी ग़ालिब गुमान) हो कि मालिक को न दूंगा तो उठाना ना जाइज़ है और अपने लिये उठाना ह़राम है और इस सूरत में ब मन्ज़िलए ग़स्ब के है (ग़स्ब करने की त़रह़ है) और अगर येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं न उठाऊंगा तो येह चीज़ ज़ाएअ़ व हलाक हो जाएगी तो उठा लेना ज़रूर है लेकिन अगर न उठावे और ज़ाएअ़ हो जाए तो उस पर तावान नहीं ।

मदينه

1 فتاوىٰ هندية، ج٢، ص٢٨٩، دار الفكر بيروت

www.dawateislami.net

लुक़्ता को अपने तसर्रुफ़ (इस्ति'माल) में लाने के लिये उठाया फिर नादिम हुवा कि मुझे ऐसा करना न चाहिये और जहां से लाया वहीं रख आया तो बरिय्युज़्ज़िमा न होगा या'नी अगर ज़ाएअ़ हो गया तो तावान देना पड़ेगा बल्कि अब इस पर लाज़िम है कि मालिक को तलाश करे और उस के ह़वाले कर दे और अगर मालिक को देने के लिये लाया था फिर जहां से लाया था रख आया तो तावान नहीं ।[1]

लुक़्ता मालिक तक कैसे पहुंचाए ?

अ़र्ज़ : लुक़्ता को उठाने के बा'द मालिक को कैसे तलाश करे और मालिक न मिल सके तो क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : अगर किसी ने लुक़्ता (गिरी पड़ी चीज़ को) उठा लिया तो अब उस पर लाज़िम है कि बाज़ारों, शारेए़ आ़म और लोगों के मज्मओं वग़ैरा में इतने दिनों तक ए'लान करे कि ग़ालिब गुमान हो जाए कि अब इस का मालिक इसे तलाश न करता होगा। फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब आ़लमगीरी में है : मुल्तक़ित़ (गिरी पड़ी चीज़ उठाने वाले) पर बाज़ारों और शारेए़ आ़म में इतने ज़माने तक तश्हीर लाज़िम है कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि मालिक अब तलाश न करता होगा। येह मुद्दत पूरी होने के बा'द उसे इख़्तियार है कि लुक़्ते़ की

---

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 473, 474, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

हिफ़ाज़त करे या किसी मिस्कीन पर स-दक़ा कर दे ।[1] मसारिफ़े ख़ैर मिस्ल मस्जिद और मद्रसए अहले सुन्नत व मत़बए अहले सुन्नत वग़ैरा में (भी) सर्फ़ हो सकता है ।[2] और उठाने वाला फ़क़ीर है तो मज़्कूरा मुद्दत तक ए'लान के बा'द ख़ुद अपने इस्ति'माल में भी ला सकता है ।[3]

स-दक़ा करने के बा'द मालिक आ जाए तो ?

अ़र्ज़ : लुक़्ते को फ़क़ीर के अपने इस्ति'माल में लाने या स-दक़ा करने के बा'द मालिक आ जाए तो फिर क्या करे ?

इर्शाद : लुक़्ते के अपने इस्ति'माल में लाने या किसी मिस्कीन पर स-दक़ा करने के बा'द अगर उस का मालिक आ जाए तो उसे स-दक़े को जाइज़ रखने या न रखने का इख़्तियार है अगर जाइज़ रखेगा तो सवाब पाएगा और जाइज़ न रखे तो अगर वोह चीज़ मौजूद है अपनी चीज़ ले ले और हलाक हो गई हो तो उसे इख़्तियार है कि मुल्तक़ित़ से तावान ले या मिस्कीन से, जिस से भी लेगा वोह दूसरे से रुजूअ़ नहीं कर सकता ।[4] اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में दीगर कामों के लिये जहां बहुत सी मजालिस बनाई गई हैं वहीं एक मजलिस बनाम "**मजलिस बराए गुमशुदा सामान**"

مدینہ

1 ...... فتاویٰ ھندیۃ، ج۲، ص۲۸۹، دار الفکر بیروت

2 ...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 563

3 ......बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 476

4 فتاویٰ ھندیۃ، ج۲، ص۲۸۹

www.dawateislami.net

भी है। सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त के दौरान लोगों की गुमशुदा अश्या मिलने पर इस्लामी भाई वहां जम्अ़ करवाते हैं फिर मालिकान अपनी गुमशुदा चीज़ की अ़लामात बता कर वहां से वुसूल कर लेते हैं। इसी त़रह़ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी मराकिज़ में भी येह मजालिस क़ाइम हैं।

बे क़ीमत चीज़ के मालिक की तलाश

अ़र्ज़ : क्या बे क़ीमत चीज़ का भी मालिक तलाश करना पड़ेगा ?

इर्शाद : ऐसी मा'मूली चीज़ जिस के फेंक देने का उ़र्फ़ हो म-सलन रस्सी या लकड़ी का टुकड़ा वग़ैरा तो ऐसी चीज़ों को उठा कर अपने इस्ति'माल में ला सकते हैं। ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने नुजैम मिस्री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : कोई ऐसी चीज़ पाई जो बे क़ीमत है जैसे खजूर की गुठली, अनार का छिल्का ऐसी अश्या में ए'लान की ह़ाजत नहीं क्यूं कि मा'लूम होता है इसे छोड़ देना इबाह़त है कि जो चाहे ले ले और अपने काम में लाए और येह छोड़ना तम्लीक (मालिक बनाना) नहीं कि मज्हूल (ना मा'लूम) की त़रफ़ से तम्लीक (मालिक बनाना) सह़ीह़ नहीं लिहाज़ा वोह अब भी मालिक की मिल्क में बाक़ी है और (बा'ज़ फु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام येह फ़रमाते हैं कि) येह हुक्म उस वक़्त है कि वोह मु-तफ़र्रिक़ (मुन्तशिर) हों और अगर इकट्ठी हों तो मा'लूम होता है कि मालिक ने काम के लिये जम्अ़ कर रखी हैं लिहाज़ा मह़फ़ूज़ रखे।[1]

---

1 اَلْبَحْرُ الرَّائِق، ج۵، ص۲۵۶، مُلْتَقَطًا، کوئٹہ

www.dawateislami.net

चाय गुर्दों के लिये मुज़िर

अ़र्ज़ : सुना है चाय नुक़्सान देह है ?

इर्शाद : जी हां ! खु़सूसन गुर्दे के मरीज़ों को बचना चाहिये। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن अल मल्फ़ूज़ में फ़रमाते हैं : "चाय गुर्दे के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है।"[1] इस का कसरत से इस्ति'माल गुर्दे के इ़लावा कई और अमराज़ का सबब भी बन सकता है चुनान्चे अति़ब्बा व हु-कमा बयान करते हैं कि चाय के कस्रते इस्ति'माल के बाइ़स ग़शी, कसल (सुस्ती), चिड़-चिड़ापन, जरयान, कस्रते एह़तिलाम, कस्रते त़म्स (है़ज़ के ख़ून की कसरत), बवासीर, ख़फ़्क़ान (दिल की धड़कन), ज़ग़-त़तुद्दम (ख़ून का ज़ियादा दबाव) बल्ड प्रेशर और ख़ारिश जैसे अमराज़ पैदा हो जाते हैं।[2] हां ! अगर इस में शकर, दूध, बालाई मिला ली जाए तो उ़म्दा ग़िज़ा बन जाती है।

दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ात

अ़र्ज़ : दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ात बि ऐ़निही इस्ति'माल करना ज़रूरी है या अपने मुल्क की ज़बान के मुत़ाबिक़ इस्त़िलाह़ात

मदينه

1...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 215, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

2 كتاب المُفْرَدات، ص٢٠٦، باب المدينه كراچی

www.dawateislami.net

का तरजमा किया जा सकता है म-सलन मजलिसे बैरूने ममालिक के बजाए Foreign Affairs Committee ?

इर्शाद : इस्तिलाहात नाम की तरह होती हैं जिस तरह मुल्क या ज़बान बदलने से नाम तब्दील नहीं होता ऐसे ही इस्तिलाहात भी तब्दील नहीं होतीं म-सलन ''**पाकिस्तान**'' येह फ़ारसी ज़बान का लफ़्ज़ है जिस का मा'ना है ''पाक सर ज़मीन'' मगर इंग्लेन्ड और दीगर ममालिक वाले भी इसे ''पाकिस्तान'' ही कहते हैं ''Holy Place'' वग़ैरा नहीं कहते। अरब वाले भी ''पाकिस्तान'' ही कहते हैं मगर अपनी लुग़त में ''پ'' न होने की बिना पर ''ب'' से बदल कर ''**باکستان**'' कहते हैं। इसी तरह कुरआन को कुरआन, हदीस को हदीस और सुन्नत को सुन्नत ही कहा जाता है।

इस्तिलाहात ''कोड'' होता है और ''कोड'' हर ज़बान में कोड ही रहता है इस लिये अपनी इस्तिलाहात को हत्तल मक़्दूर न बदला जाए।

हलाल और हराम जानवरों में हिक्मत

अर्ज़ : बा'ज़ जानवर हलाल हैं और बा'ज़ हराम हैं इस में क्या हिक्मत है ?

इर्शाद : इन्सान जो ग़िज़ा खाता है वोह उस का जुज़्वे बदन बन जाती है और इस के अख़्लाक़ व आदात में उस के अ-सरात ज़ाहिर होते हैं। शरीअते मुतह्हरा ने बा'ज़ जानवरों को हराम फ़रमा

www.dawateislami.net

कर उन के गोश्त खाने से मन्अ़ फ़रमाया है ताकि उन जानवरों में पाई जाने वाली मज़्मूम सिफ़ात इन्सान में पैदा न हों। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : गोश्त या जो कुछ ग़िज़ा खाई जाती है वोह जुज़्वे बदन हो जाती है और उस के अ-सरात ज़ाहिर होते हैं और चूंकि बा'ज़ जानवरों में मज़्मूम सिफ़ात पाए जाते हैं उन जानवरों के खाने में अन्देशा है कि इन्सान भी उन बुरी सिफ़तों के साथ मुत्तसिफ़ हो जाए लिहाज़ा इन्सान को उन के खाने से मन्अ़ किया गया।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अ़ह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ग़िज़ा का असर भी दिल पर पड़ता है। सुवर खाना शरीअ़त ने इसी लिये ह़राम फ़रमा दिया कि इस से बे ग़ैरती पैदा होती हैं। क्यूं कि सुवर बे ग़ैरत जानवर है और सुवर खाने वाली क़ौमें भी बे ग़ैरत होती हैं जिस का तजरिबा हो रहा है अगर चीते या शेर की चरबी खाई जाए तो दिल में सख़्ती और बर-बरिय्यत पैदा होती है चीते और शेर की खाल पर बैठना इसी लिये मन्अ़ है कि इस से ग़ुरूर पैदा होता है, ग़-रज़े कि मानना पड़ेगा कि ग़िज़ा और लिबास का असर दिल पर होता है तो अगर काफ़िरों की त़रह़

1 .....बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 323

www.dawateislami.net

लिबास पहना गया या कुफ़्फ़ार की सी सूरत बनाई गई तो यक़ीनन दिल में काफ़िरों से महब्बत और मुसल्मानों से नफ़रत पैदा हो जावेगी ग़-रज़े कि येह बीमारी आख़िर में मोहलिक साबित होगी इस लिये ह़दीसे पाक में आया है : ''مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ[1] जो किसी दूसरी क़ौम से मुशा-बहत पैदा करे वोह उन में से है।''[2]

जानवरों की खाल पर बैठने की तासीर

अ़र्ज़ : क्या जानवरों की खाल पर बैठने से भी इन्सान की त़बीअ़त पर असर होता है ?

इर्शाद : जी हां ! गोश्त की त़रह़ इन की खाल पर बैठने की भी तासीर होती है इसी लिये ''ह़दीसे पाक में दरिन्दों की खाल के बने हुए बिछोने इस्ति'माल करने से मन्अ़ फ़रमाया गया है।''[3] नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चीते की खाल की ज़ीन पर सुवार होने से भी मन्अ़ फ़रमाया है।[4]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उस ज़माने में मु-तकब्बिर लोग फ़ख़्र के त़ौर पर चीते की खाल की ज़ीन घोड़े पर डाल कर

مدینہ

1 معجمِ اَوْسَط، ج۲، ص۱۵۱، حدیث ۸۳۲۷، دار الفکر بیروت

2 ...... इस्लामी ज़िन्दगी, स. 86, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

3 تِرمِذی، ج۳، ص۲۹۹، حدیث ۱۷۷۷، دار الفکر بیروت

4 مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزّاق، ج۱، ص۵۴، حدیث ۲۲۰، دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

सुवार होते थे येह त़रीक़ा मु-तकब्बिर ही का था, नीज़ चीते और शेर की खाल पर सुवारी दिल में तकब्बुर और सख़्ती पैदा करती है इस लिये इस से मन्अ़ फ़रमा दिया गया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दरिन्दों की खाल के बने हुए बिछोने वग़ैरा इस्ति'माल करने से इज्तिनाब कीजिये कि येह मु-तकब्बिरीन का त़रीक़ा है और इस से दिल में सख़्ती पैदा होती है। अगर खाल इस्ति'माल करनी ही है तो बकरी और मेंढे की खाल इस्ति'माल कीजिये कि इस से मिज़ाज में नरमी और आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा होती है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1360 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 402 पर है : ''दरिन्दे की खाल अगर्चे पका ली गई हो (ख़ुश्क कर के तय्यार कर ली गई हो), न उस पर बैठना चाहिये, न नमाज़ पढ़नी चाहिये कि मिज़ाज में सख़्ती और तकब्बुर पैदा होता है, बकरी और मेंढे की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नरमी और इन्किसार पैदा होता है।''

दिल का ख़ून साफ़ किये बिग़ैर सालन में डालना

अ़र्ज़ : मुर्ग़ी के दिल का ख़ून साफ़ किये बिग़ैर सालन में डाल सकते

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 500, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

हैं या नहीं ?

इर्शाद : मुर्ग़ी का दिल पकाना हो तो उसे साबित न पकाइये बल्कि लम्बाई में चार चीरे लगा कर पहले ख़ून को अच्छी त़रह़ धो कर उसे साफ़ कर लीजिये फिर सालन में डालिये ।

ज़बीह़ा के दिल का ख़ून पाक है या नापाक ?

अ़र्ज़ : क्या दिल का ख़ून नापाक है ?

इर्शाद : इस में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है या'नी बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ज़बीह़ा के दिल के ख़ून को पाक कहते हैं जब कि बा'ज़ के नज़्दीक येह नापाक है । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن दोनों त़रफ़ के अक़्वाल नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''और ज़ाहिर है नजासत मुस्बिते ह़ुरमत है और त़हारत मुफ़ीदे ह़िल्लत नहीं ।''[1] या'नी येह त़ै है कि हर नापाक चीज़ का खाना ह़राम है मगर हर पाक चीज़ का खाना ह़लाल भी नहीं । **बह़र ह़ाल** मस्अला मुख़्तलिफ़ फ़ीह है और इख़्तिलाफ़ दिल के ख़ून के पाक होने और न होने में है लिहाज़ा अगर कोई सालिम दिल सालन में पका ले तो उस सालन को नापाक न कहा जाए मगर ज़बीह़ा का ख़ूने दिल हरगिज़ खाया भी न जाए बल्कि दिल में पके हुए सियाह रंग के ख़ून को निकाल

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 237

www.dawateislami.net

दिया जाए।

कपूरे खाना कैसा ?

अ़र्ज़ : कपूरे खाना कैसा है ?

इर्शाद : कपूरे खाना मक्रूहे तह़रीमी है। इसे ख़ुस्या, फ़ौता़ या बैज़ा भी कहते हैं। येह बकरे, बेल वग़ैरा नर (या'नी मुज़क्कर) में नुमायां होते हैं। मुर्ग़े का पेट खोल कर आंतें हटाएं तो पीठ की अन्दरूनी सत़्ह़ पर अन्डे की त़रह़ सफ़ेद दो छोटे छोटे बीज नज़र आएंगे येही कपूरे हैं, इन को निकाल दीजिये। अफ़्सोस ! मुसल्मानों के बा'ज़ होटलों में दिल, कलेजी के इ़लावा बेल, बकरे के कपूरे भी तवे पर भून कर पेश किये जाते हैं। ग़ालिबन होटल की ज़बान में इस डिश को ''कटाकट'' कहा जाता है। शायद इस को ''कटाकट'' इस लिये कहते हैं कि गाहक के सामने ही दिल या कपूरे वग़ैरा डाल कर तेज़ आवाज़ से तवे पर काटते और भूनते हैं इस से ''कटाकट'' की आवाज़ गूंजती है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 20 सफ़ह़ा 240 पर जहां ह़लाल जानवर के वोह 22 अज्ज़ा बयान फ़रमाए हैं जिन का खाना ह़राम या मम्नूअ़ या मक्रूह है उन में से एक

www.dawateislami.net

बैज़े (या'नी खुस्ये और कपूरे) को भी शुमार किया है।[1]

मोटापा कम करने के चन्द इलाज

अ़र्ज़ : मोटापा कम करने के लिये इलाज तज्वीज़ फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : मोटापा कम करने के लिये घी, तेल और चिक्नाई वाली चीज़ों के इस्ति'माल से इज्तिनाब कीजिये कि उ़मूमन येही चीज़ें मोटापे का बाइ़स बनती हैं। सब्ज़ियों का कसरत से इस्ति'माल कीजिये मगर येह सिर्फ़ पानी में उब्ली हुई हों या एक फ़र्द के लिये सिर्फ़ चाय की एक चम्मच "ज़ैत" या'नी ज़ैतून शरीफ़ का तेल डाल कर पकाई गई हों, मिर्च मसा-लहा और हल्दी डालने में ह़रज नहीं, मज़्कूरा त़रीक़े पर बनी हुई सब्ज़ी के इस्ति'माल से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मोटापा दूर हो जाएगा। **जब** भी खाना खाएं तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक पाउं खड़ा कर के और दूसरा बिछा कर खाएं कि चार ज़ानू (आल्ती पाल्ती मार कर) खाने के आ़दी का मोटापा बढ़ता और तोंद निकल आती है। खाने के फ़ौरन बा'द पानी पीने से बचिये कि इस से बदन फूलता, वज़्न बढ़ता और मोटापा आता है।

مدینہ

1 ..... मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत" के सफ़ह़ा 583 ता 586 का मुत़ा-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

मोटापा कम करने के लिये हर रोज़ तीन अ़दद अन्जीर खाने का मा'मूल बना लीजिये कि अन्जीर मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है। मोटापे का सब से बेहतरीन इ़लाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है और वोह येह कि ''भूक के तीन ह़िस्से कर लिये जाएं एक ह़िस्सा ग़िज़ा, एक ह़िस्सा पानी और ह़िस्सा सांस के लिये।''[1] अगर बयान कर्दा एह़तियात़ों पर अ़मल किया जाए और खाने में ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमूदा त़रीक़ा अपना लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा और न ही कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़ और क़ब्ज़ वग़ैरा का आ़रिज़ा मगर हाए ! लज़्ज़त ख़ोर नफ़्स की ह़ीला बाज़ियां ![2]

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

❀❀❀❀❀

مدینہ

1 شُعَبُ الاِیمان، ج۵، ص۲۸، حدیث ۵۶۵۰، دارالکتب العلمیۃ بیروت

2 ..... मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' के सफ़ह़ा 719 ता 721 का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	लुक़्त़ा मालिक तक कैसे पहुंचाए ?	16
अमीरे अहले सुन्नत की मिसाली शख़्सिय्यत	2	स-दक़ा करने के बा'द मालिक आ जाए तो ?	17
बैरूने मुल्क अस्फ़ार	4	बे क़ीमत चीज़ के मालिक की तलाश	18
अमीरे अहले सुन्नत के तअस्सुरात	4	चाय गुर्दों के लिये मुज़िर	19
इस्लाहे उम्मत के लिये लाइह़ए अ़मल	5	दा'वते इस्लामी की इस्ति़लाह़ात	19
दा'वते इस्लामी के शो'बाजात	7	ह़लाल और ह़राम जानवरों में ह़िक्मत	20
क्या मुसल्मान जिन्नात जन्नत में जाएंगे ?	8	जानवरों की खाल पर बैठने की तासीर	22
काफ़िर जिन्नात कहां जाएंगे ?	9	दिल का ख़ून साफ़ किये बिग़ैर सालन में डालना	23
बुज़ुर्गों की निशस्त गाह पर बैठना	11	ज़बीह़ा के दिल का ख़ून पाक है या नापाक ?	24
मंगल के दिन कपड़ा न काटा जाए	13	कपूरे खाना कैसा ?	25
म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त	14	मोटापा कम करने के चन्द इ़लाज	26
लुक़्त़ा की ता'रीफ़ और इस का हुक्म	15		

❀❀❀❀❀

www.dawateislami.net

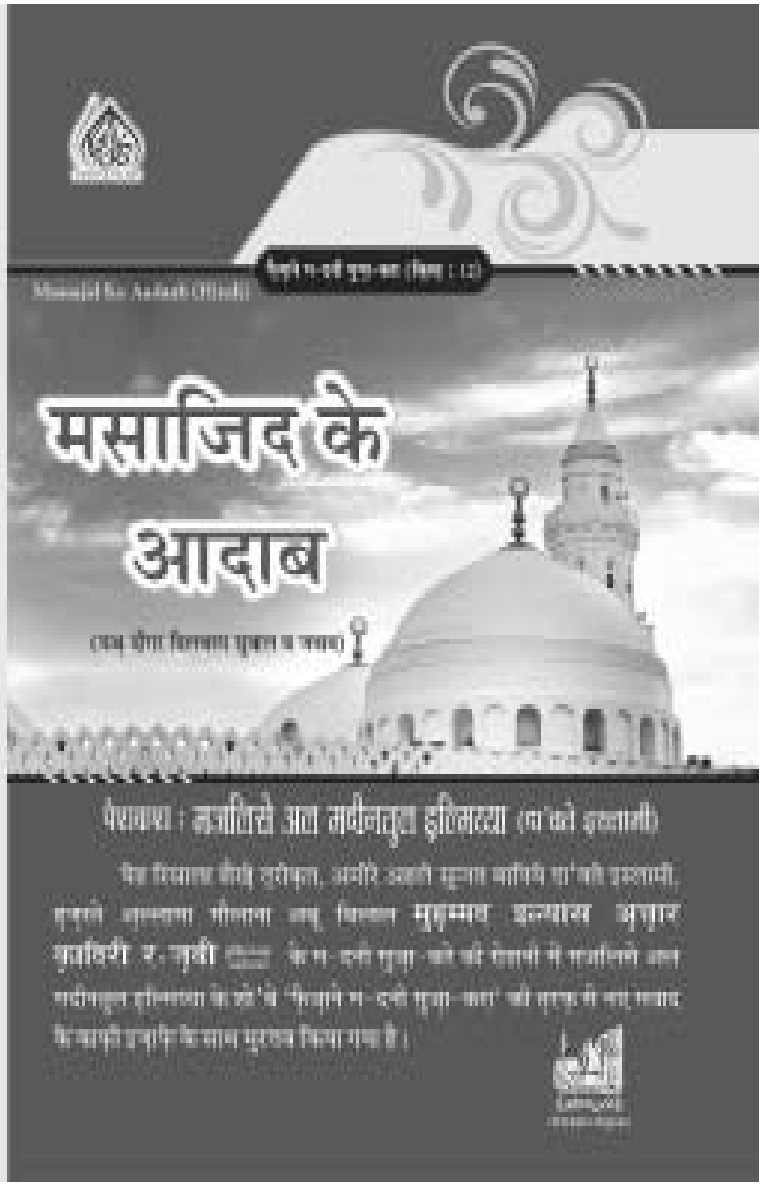

www.dawateislami.net